संस्कृत भाषा की विशिष्टता

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

भारत की संस्कृति की निधिरक्षिका, समस्त भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा के प्रति देश में जो एक विशिष्ट सम्मान है उसका सभी विश्व के किसी भी देश में किसी भाषा के मामले में नहीं मिल सकता। वेद, धर्मशास्त्र, पुराण, दर्शन, विज्ञान, व्याकरण, आयुर्वेद, काव्य, नाटक आदि अमूल्य वाङ्मय जो इस भाषा में समाहित है, उसकी प्रशंसा तो विश्व के सभी विद्वानों ने की है। इसलिए जिस भाषा में वह वाङ्मय निबद्ध है उसका आदर होना स्वाभाविक है, किन्तु संस्कृत में अपने आप में भाषा के रूप में जो विशेषताएं हैं वे भी इस विश्व की एक अनुपम भाषा का दर्जा दे देती है। संस्कृत की इन सभी विशेषताओं का आकलन किया जाए तो भारत में ही नहीं विश्व में इसकी विशिष्ट स्थिति का अनुमान सहज ही हो सकता है।

भाषा की दृष्टि से संस्कृत की विशेषता यह है कि यह विश्व की उन प्राचीनतम भाषाओं में से एक है जो कम से कम पांच हजार वर्ष पूर्व की है और आज जिनमें से संस्कृत के अतिरिक्त सभी का स्वरूप इतना बदल गया है कि किसी के प्राचीन ग्रन्थों को आज का विद्वान् पढ़ और समझ नहीं सकता। संस्कृत एक मात्र ऐसी भाषा है जिसका मूल स्वरूप और व्याकरणीय ढाँचा लगभग पांच हजार वर्षों से वैसा ही है। आज से डेढ़ दो सौ वर्ष पूर्व यूरोप के भाषा वैज्ञानिकों के शोधों से यह ज्ञात हुआ था, कि आज विश्व में प्रचलित अधिकांश भाषाओं की मूलभूत एक प्राचीन भाषा थी जिससे फारसी, जर्मन, फ्रेंच, रूसी, ग्रीक, लैटिन आदि भाषाएं विकसित हुई हैं। यह मूल भाषा आज अज्ञात है, क्योंकि हजारों वर्षों में इससे निकली भाषाएं इतनी परिवर्तित हो गयीं कि यह अन्दाजा भी नहीं लगाया जा सकता कि वह कैसी होगी। इन भाषाओं के परिवार का नमकरण दो शती पूर्व यूरोपीय भाषाशास्त्रियों

द्वारा इंडोयूरोपीयन या भारोपीय भाषा परिवार किया गया था। इसकी प्राचीन भाषाएं आज कहीं नहीं बोली जाती जेंद, प्राचीन ग्रीक, प्राचीन लैटिन आदि भाषाएं लुप्त हो गयीं क्योंकि उनसे निकली आधुनिक भाषाएं उनके मूल ढांचे से बिल्कुल अलग हो गयीं। संस्कृत एकमात्र ऐसी भाषा है जिसका अधिकांश मूल रूप यों कि यों आज भी सुरक्षित है।

इसका अधिकतर श्रेय तो पाणिनि को जाता है, जिसने आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व इतना उत्तम व्याकरण बनाया, कि उसका अनुसरण कर शुद्ध भाषा लिखना सारे संस्कृत जगत् ने आवश्यक मान लिया। तबसे इस भाषा का स्वरूप वैसा ही बना है। पाणिनि ने अपने से पूर्व की वैदिक और लौकिक भाषाओं का समन्वय कर यह व्याकरण बनाया था, इसलिए वैदिक भाषा जो कम से कम चार पांच हजार वर्ष पुरानी है, संस्कृत से बिल्कुल मिलती जुलती है। यही कारण है कि हजारों वर्ष पुरानी वैदिक भाषा सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् आदि उसके हजारों वर्ष बाद की पौराणिक भाषा धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः उसके सैकड़ों वर्ष बाद की शंकराचार्य की भाषा अंगं गलितं पलितं मुंडम् और आज लिखी बोली जा रही संस्कृत एक ही भाषा लगती है। विश्व की किसी भी अन्य भाषा की यह स्थिति नहीं रही। तभी तो यह अमर भाषा कही जाती है।

एक उदाहरण ही हमारी इस बात को स्पष्ट करने को पर्याप्त होगा। बहुत पुरानी भारोपीय भाषा में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन होते थे पर आज विश्व की शायद ही कोई भाषा हो जिसमें तीन वचन होते हों। एकवचन और बहुवचन - हिन्दी अंग्रेजी आदि सभी भाषाओं की यही स्थिति है। पहले ग्रीक और लैटिन में भी द्विवचन होता था पर मिडिल ग्रीक और मिडिल लैटिन के समय में हजारों वर्ष पूर्व उसे समाप्त कर केवल दो वचन ही रखे गये- एकवचन और बहुवचन। संस्कृत में आज भी बालकः, बालकौ, बालकाः, पठति पठतः पठन्ति सभी जगह द्विवचन बैठा है। इस प्रकार अन्य सभी भाषाओं में जहां पुराने भाषिक ढांचे में परिवर्तन हो गये वहां संस्कृत में वही प्राचीनतम मूल रूप लगभग ज्यों की त्यों सुरक्षित है।

तभी तो प्राचीनतम भाषाओं के स्वरूप के अध्ययन के लिए विश्व में सर्वत्र भाषाशास्त्री संस्कृत अध्ययन को अनिवार्य मानते हैं क्योंकि यह आज भी सुरक्षित है। यही इसकी सर्वप्रमुख विशेषता है कि यह प्राचीनतम रूप में आज भी सुरक्षित है। यह पुरातन होते हुए भी चिरनूतन है। आज भी इसमें कविता, कहानी, उपन्यास, पत्र सभी लिखे जाते हैं, पत्रिकाएं निकलती हैं, समाचार पत्र निकलते हैं, कविसम्मेलन होते हैं, शास्त्रार्थ होते हैं।

आकशवाणी से दिन में दो बार और दूरदर्शन से सप्ताह में एक बार समाचार प्रसारित होते हैं। शुद्ध संस्कृत में बनी पूर्णकालिक फीचर फिल्म आदिशंकराचार्य लोकप्रिय भी हुई है और भरपूर पुरस्कृत भी। दूरदर्शन पर संस्कृत धरावाहिक के रूप में मृच्छकटिक आदि नाटक व कथानक प्रसारित हो चुके हैं। इस प्रकार यह काल की सीमाओं को लांघ कर आने वाली अमर भाषा है।

यह देश की सीमाओं को भी लांघ गयी है। भारत के प्रत्येक कोने में संस्कृत में ही सारे धार्मिक कार्य होते हैं। कर्णाटक का एक गांव मत्तूर तो प्रत्येक कार्य में संस्कृत का प्रयोग कर संस्कृतभाषी ही बन गया है। विश्व के अन्य देशों में भी संस्कृत उसी पाणिनीय ढांचे में पढ़ी लिखी जाती है।

इसकी अन्य विशेषता इसमें अन्तर्निहित शब्दनिर्माण की भाषिक क्षमता। पाणिनि की कृपा से इसमें धातु-प्रत्यय उपसर्ग आदि लगा कर शब्द बनाने की जो प्रक्रिया स्थापित हुई, उसके कारण इसका शब्द भंडार अरबों खरबों तक ही नहीं जाता, वस्तुतः असंख्य और अनन्त है। आज भी उस प्रक्रिया से करोड़ों शब्द बनाये जा सकते हैं। तभी तो नवीनतम अभिव्यक्तियों के लिए शब्द आवश्यक होने पर डॉ. रघुवीर तथा अन्य विद्वानों की सहायता से भारत सरकार के शब्दावली आयोग ने संस्कृत का आधार लेकर आसानी से पांच लाख पारिभाषिक शब्द संकलित कर लिए थे जिनके आधार पर आज हिन्दी में ही नहीं, अन्य भारतीय भाषाओं में भी विज्ञान, मानविकी आदि की शिक्षा दी जा रही है।

समस्त भारतीय भाषाओं में संस्कृत की यह शब्दावली ली गयी है। यही नहीं, संस्कृत वाङ्मय की जो सांस्कृतिक थाती है उसका प्रभाव समस्त भारतीय भाषाओं पर है। इन्द्र, विष्णु आदि देवों की उपासना, राम, कृष्ण और पांडवों की कथा, शंकराचार्य और वैष्णवाचार्यों के उपदेश सारी भारतीय भाषाओं के साहित्य पर छाये हुए हैं। तभी यह समस्त भारतीय भाषाओं की जननी कही जाती है। इस दृष्टि से संस्कृत पूरे देश की सांस्कृतिक एकता की अविच्छिन्न कड़ी है। तभी तो इसके प्रति सारे देश की अविचल श्रद्धा है।

संस्कृत में निहित वेद, वेदांग, दर्शनशास्त्र आदि का अनुशीलन तो सारे देश में अनुवादों के माध्यम से हुआ ही है। संस्कृत के अमर कवि कालिदास, भास, भवभूति, माघ आदि का प्रभाव भी भारत की समस्त भाषाओं के साहित्य पर स्पष्ट देखा जा सकता है। विश्व का कौन ऐसा साक्षर होगा, जो भारत के कालिदास का नाम न सुन चुका

हो और इसे कालिदास का देश कहने पर न पहचान पाता हो। यूरोप और इंग्लैंड के विद्वान् जब भारत के संपर्क में आए तो ताजमहल और तख्ते -ताऊस से जितने प्रभावित नहीं हुए, उससे अधिक संस्कृत और इसके साहित्य के दीवाने हो गए। जर्मन कवि गेटे के बारे में तो कहा जाता है, कि वह अभिज्ञानशाकुन्तलम् का अनुवाद पढ़ कर नाच उठा था।

गीता से तो विश्व के सारे दार्शनिक ही नहीं आइन्स्टीन जैसे वैज्ञानिक भी प्रभावित थे।

आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ायी जाती है। अनेक प्राच्य शोध संस्थाएँ संस्कृत भाषा और वाङ्मय के अनुसंधान का कार्य कर रही हैं। अनेक अन्ताराष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन / संस्थान कार्यरत हैं। जर्मनी, इंगलैंड, अमेरिका, रूस आदि के विद्वानों ने भी संस्कृत वाङ्मय के अनुवाद, अनुसंधान, प्रकाशन आदि का उत्कृष्ट कार्य किया है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में संस्कृत के पुनर्जागरण का दौर मुद्रणालयों के और पत्रकारिता के उद्विकास के फलस्वरूप आया। संस्कृत को देख कर ही भाषाशास्त्रियों में तुलनात्मक भाषा विज्ञान की शाखा का प्रादुर्भाव हुआ। भारत के मनीषी तो सदियों से संस्कृत के भक्त और अनुशीलनकर्ता रहे ही हैं, पाश्चात्त्य विद्वानों ने भी संस्कृत की महत्ता पर इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ दी हैं, जिन्हें पढ़ कर हमारे अपने लोग स्वयं की इस थाती का महत्त्व समझने लगे हैं। प्रो. डब्लू.ए. विल्सन नामक पाश्चात्य विद्वान् ने संस्कृत की अमरता के बारे में संस्कृत के जो श्लोक लिखे थे, उनमें से यह एक पद्य तो संस्कृत विद्वानों के कंठ में बस गया था, जिसमें विल्सन ने कहा है, कि संस्कृत अमर है जब तक भारत रहेगा, विंध्य और हिमालय रहेगा, गंगा और गोदावरी रहेगी, संस्कृत कायम रहेगी।

यावद् भारतवर्षं स्याद् यावद् विन्ध्यहिमाचलौ।
यावद् गंगा च गोदा च तावदेव हि संस्कृतम्॥

यह पद्य अयोध्या से निकलने वाली संस्कृत पत्रिका संस्कृतम् के प्रत्येक अंक में आदर्शवाक्य के रूप में छपता था।